33

# मेरा क्रूस

## मत्ती 10:37-39; 16:24-26; मरकुस 8:34-37; लूका 9:23-25; 14:26, 27; रोमियों 6:1-11; गलातियों 2:20, 21; 6:14; फिलिप्पियों 1:21

''और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले, वह मेरे योग्य नहीं'' (मत्ती 10:38)।

यीशु का क्रूस अपना था, आप का अपना और मेरा अपना है। उसके क्रूस का प्रचार करना और आपके और मेरे क्रूस को नज़रअंदाज़ करना आसान है। यदि हमें अपने क्रूस का पता नहीं है तो हम उसके क्रूस को पा नहीं सकते। जब तक हम अपने क्रूस नहीं उठाते तब तक हमारे जीवन के लिए उसका क्रूस किसी काम का नहीं। हो सकता है कि मैं संसार को न बदल पाऊं परन्तु परमेश्वर मुझे बदल सकता है। मेरी जगह धार्मिकता के मार्ग पर कोई और नहीं चल सकता। ''महान वह'' को पाने के लिए मेरे लिए ''बड़ा मैं'' को बलिदान करना आवश्यक है। मेरे अन्दर सम्पूर्ण भलाई मसीह का मुझ में होना है (गलातियों 2:20, 21)। क्रूस पर यीशु हमारी *जगह* ही नहीं, बल्कि हमारे *लिए* भी मरा।

हम भी मरते, दु:ख सहते और अपने क्रूस उठाते हैं। उसने अपना क्रूस उठाया और हमारे लिए भी अपने क्रूस उठाना आवश्यक है। अनुग्रह को कमाया नहीं जाता, परन्तु इसे पाने के लिए हमारी ओर से प्रयास होने आवश्यक हैं। मुक्ति ''उद्धारकर्त्ता आप अन्दर आ जाइए पर प्रभु आप बाहर रहें'' कदाचित नहीं हो सकती। मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने सही कहा था, ''जो क्रूस हम उठाते हैं, वह वास्तव में उस मुकुट से पहले मिलता है, जो हमें मिलने वाला है।''[1] गले में डाला जाने वाला क्रूस कभी भी कन्धे पर रखने वाला क्रूस नहीं बन सकता।

''सस्ता अनुग्रह'' जैसी कोई बात नहीं है और न ही सस्ते क्रूस मिलते हैं। सहनशील होना आसान है पर सच्चा प्रेम व्यवहार में लाना कठिन है।

आइए वचन में वापस चलते हैं: *''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले''* (लूका 9:23; देखें मत्ती 16:24; मरकुस 8:34)। अपना क्रूस उठाने का क्या अर्थ है?

(1) *अपना क्रूस विशेष है।* क्रूस उठाने की यीशु की आज्ञा उसकी सबसे बड़ी आज्ञाओं में से एक हो सकती है। उसकी शर्त धर्मसिद्धांत, असहनशील, अवश्य माननीय और अनन्त महत्व वाली है। यीशु ने कहा या तो आप ''अन्दर'' आ जाएं या फिर ''बाहर'' हो जाएं। उसने ''यदि,

और या परन्तु'' की गुंजाइश नहीं छोड़ी। उसने कहा, ''और जो कोई अपना क्रूस न उठाए; और मेरे पीछे न आए; वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता'' (लूका 14:27)। उसने कहा, ''इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता'' (लूका 14:33)। क्रूस मृत्यु के लिए पुकारता है अर्थात हमारे लिए अपने आप से, पाप से और समाज से मरना आवश्यक है। क्रूस महंगे हैं। मूल रूप में हमारी तीन समस्याएं हैं: ''मैं, मेरा और मुझे।'' हमें इन तीनों से मरना आवश्यक है। क्रूस के सतही विचारों के कारण कमज़ोर मसीही बनते हैं। हम क्रूस पर समझौता नहीं कर सकते। मसीह जीवन आसान और खुशहाल नहीं है। क्या हम कीमत चुकाएंगे? क्या हम अपने पाप से मरेंगे? क्या हम अपने अधिकारों को त्यागेंगे? यीशु प्रभु है। हमारे लिए अपने आप को खोए हुए मानना और उसमें आज्ञाकारी विश्वास पाना आवश्यक है।

हम जानते हैं कि हमारे लिए परमेश्वर में विश्वास लाना आवश्यक है। हमें यह भी मालूम होना आवश्यक है कि परमेश्वर हम पर विश्वास करता है। पत्रियां जीने की शक्ति सुसमाचार की पुस्तकों वाली क्रूस की कहानी में से ही मिलती हैं। हमें क्षमा किया जाता है न कि जमानत पर छोड़ा जाता है। हमें अपराधियों की तरह जीने के लिए नहीं बचाया गया। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर हमारे अन्दर ''इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डालता है'' (फिलिप्पियों 2:13)। मसीही लोगों को आदर के बर्तन बनना आवश्यक है (2 तीमुथियुस 2:20, 21)। हम सबको परमेश्वर के साथ अपना निजी सम्बन्ध बनाने और बढ़ाने की आवश्यकता है। हम संदेह में रहकर अपने विश्वास से मिलने नहीं जा सकते। हमें विश्वास में रहकर अपने संदेह को छोड़ना आवश्यक है।

(2) *क्रूस प्रतिदिन उठाना है।* ''क्या!'' प्रतिदिन? मसीही होना जीवन है न कि पल। पौलुस ने दो टूक कहा, ''... मैं प्रतिदिन मरता हूं'' (1 कुरिन्थियों 15:31)। जैसे जीवन प्रतिदिन जीना आवश्यक है, वैसे ही मसीही बनना भी प्रतिदिन होता है। हमें प्रतिदिन की रोटी (मत्ती 6:11) अर्थात प्रतिदिन के आत्मिक भोजन (प्रेरितों 17:11; इब्रानियों 3:13) की आवश्यकता होती है। आरम्भिक कलीसिया प्रतिदिन बढ़ रही थी (प्रेरितों 2:47; 16:5)। उद्धार पाने के लिए एक पापी के लिए अपने आप से मरना और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना आवश्यक है। ये दोनों काम अलग-अलग हैं, एक नहीं। ''अपने आप का इनकार करने'' को ''क्रूस उठाना'' के साथ न उलझाएं।

हमें प्रतिदिन क्षमा की आवश्यकता होती है। कल की क्षमा आज या कल के लिए काफी नहीं है। मन परिवर्तन में हम एक ही बार मरकर मरे नहीं रहते। प्रतिदिन मरना हमारी प्रतिदिन की पसन्द है। हमारे लिए वह मसीही बनाना आवश्यक है, जो मसीह के साथ क्रूस पर दिया जीवन प्रतिदिन जीना चाहते हैं। मसीही होने के कारण ...

... हम एक ही दिशा में जा रहे हैं।
... हम पीछे को मुड़ नहीं सकते।
... हमारी योजनाएं अब हमारी अपनी नहीं हैं।
... हमारे मन हैं, जिनके द्वारा मसीह सोचता है।
... हमारे हृदय हैं, जिनके द्वारा मसीह प्रेम करता है।
... हमारे स्वर हैं, जिनके द्वारा मसीह बोलता है।
... हमारी देहें हैं, जिनके द्वारा मसीह सेवा करता है।

अपना क्रूस तब तक उठाए रखें, जब तक कोई ऐसा नहीं मिल जाता जिसे आप से अधिक उसकी आवश्यकता हो, फिर यह उसे दे दें। (आप उसे कभी नहीं देंगे।)

(3) *मेरा क्रूस मेरे कई बोझों में से एक नहीं है।* कइयों को लगता है कि ''यह बोझ मेरे क्रूस पर होना आवश्यक है।'' यीशु ने ''क्रूस'' कहा, ''क्रूसों'' नहीं। क्रूस वह है जिसे हम ''उठाते'' हैं न कि वह जिसे ''किसी के साथ'' रखते हैं। ऐसी सोच मसीही लोगों को शिकार बना लेती है। बाइबल में गलातियों 2:20, 21 सबसे बढ़कर ''अपने आप में भरपूर'' वचन है। इन वचनों में आठ व्यक्तिवाचक सर्वनामों का इस्तेमाल किया गया है। ''मैं'' पांच बार आता है, जबकि ''मेरे'' तीन बार आता है। बड़ा विरोधाभास क्या है? अपने आप को क्रूस पर देने से सच्चा जीवन मिलता है। मरे हुए व्यक्ति को न तो मारा जा सकता है और न ही घायल किया जा सकता है। हम में से कई लोग पूरी तरह नहीं मरे हैं। हर बात के लिए मर चुके व्यक्ति में कुछ भी त्याग देने की क्षमता है। मसीह व्यक्ति के लिए सेवा आरम्भ करने से पहले मरना आवश्यक है।

(4) *मेरा क्रूस शोक की बात या अफसोसजनक शहादत नहीं है।* मेरा क्रूस आनन्द को दर्शाता है, न कि निराशावादी ''मृत्यु और उदासी'' को (देखें यूहन्ना 15:11-14; रोमियों 14:17; 15:13; इब्रानियों 12:2; याकूब 1:2; 1 यूहन्ना 1:4; 3 यूहन्ना 4)। अफसोस की बात है कि हमें दोष का पता है, परन्तु हमें अनुग्रह और धन्यवाद का पता नहीं। आनन्द के बिना अपने बलिदान की शिक्षा न दें। सुसमाचार के संदेश को स्तोइकिवाद से न मिलाएं। क्रूस उठाना सकारात्मक है न कि नकारात्मक, यानी यह आनन्द से भरा है, न कि शोक से। इससे विजयी जीवन मिलता है न कि मानसिक शहादत। हमें ''परमेश्वर की क्षमा'' में बने रहने के लिए बुलाया जाता है।

(5) *अपना क्रूस क्षमा को मान लेना और दूसरों के साथ उद्धार को बांटना है।* अपना क्रूस उठाना, क्षमा पाए हुए जीना, दूसरों को क्षमा करना और स्वयं को मारना है ताकि हम दूसरों को सिखा सकें और उनकी सेवा कर सकें (1 यूहन्ना 3:16-18)। क्रूस दूसरों को क्षमा करने की हमारी पुकार है। जिस चीज़ को हम देने से इनकार करते हैं वह हमें मिल नहीं सकती। जब तक मनुष्य अनुग्रह को ग्रहण नहीं करता, तब तक उसे दया की समझ नहीं आ सकती।

हर व्यक्ति स्वयं यह निर्णय लेते हुए कि यीशु का बलिदान कैसे ग्रहण करना है, ''क्रूस पर ही अपनी पुस्तक लिखता है।'' मैंने अपनी पुस्तक लिख ली है; आप अपनी लिख लें।

*क्रूस ...*
*और मार्ग ही नहीं है!*

---

टिप्पणी

[1]मार्टिन लूथर हकंग, जूनि., ''चैलेंज टू इ चर्चेज़ एण्ड सिनागोग्स,'' *चैलेंज टू द रिलिजन,* सं. मैथ्यू अहमान (शिकागो: हेनरी रेग्नरी कं., 1963), 168.